फिदेल

एक निजी शब्द चित्र

गेब्रियल गार्सिया मार्क्वेज

गार्गी
प्रकाशन

द्वितीय पुनर्मुद्रणः अगस्त, 2017
प्रथम पुनर्मुद्रणः फरवरी, 2012
प्रथम संस्करणः जनवरी, 2006

'ए पर्सनल पोर्ट्रेट ऑफ फिदेल'
का हिन्दी अनुवाद

अनुवादकः आशु वर्मा

गार्गी प्रकाशन
1/4649/45बी, गली न. 4,
न्यू मॉडर्न शाहदरा, दिल्ली-110032
द्वारा प्रकाशित

मुद्रणः
प्रोग्रेसिव प्रिन्टर्स ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया,
जीटी रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095

ISBN 81.87772.18.2

मूल्यः 10 रुपये

Fidel: Ek Niji Shabda Chitra: Gabriel Garcia Marquez
(Hindi Translation of A Personal Portrait of Fidel)

फिदेल ने एक असाधरण आदमी के रूप में मुझे प्रभावित किया। वह असम्भव मामलों को निपटा सकता था और असम्भव कामों को अंजाम देता था। उसे गहरा भरोसा था कि एक बार क्यूबा के लिए चल पड़ा तो वह जरूर वहाँ पहुँच जायेगा, एक बार वहाँ पहुँच गया तो लड़ेगा जरूर और लड़कर जीतेगा। मैं उसके उद्दाम आशावाद का सहभागी था।

- अर्नेस्टो चे ग्वेरा

मुझे विश्वास है कि यही वह फिदेल कास्त्रो है जिसे मैं जानता हूँ । . . . एक संयम से जीने वाला आदमी जिसकी जिज्ञासाओं का कोई अन्त नहीं, जिसने पुराने ढंग की औपचारिक शिक्षा पायी है, नपे-तुले शब्द बोलता है, जिसके तौर-तरीकों में सादगी है और जो सहज विचारों के अलावा किसी भी विचार को ग्रहण करने में असमर्थ है । . . .उसे लगभग रहस्यात्मक किस्म का दृढ़ विश्वास है कि मनुष्य की महानतम उपलब्धि चेतना का समुचित निर्माण है और भौतिक नहीं बल्कि नैतिक प्रेरणाओं के बल पर ही दुनिया को बदलना और इतिहास को आगे बढ़ाना मुमकिन है। मेरा विश्वास है कि वह हमारे समय के महानतम आदर्शवादियों में से एक है और शायद यही उसका सबसे बड़ा गुण हो, हालाँकि यही उसके लिए सबसे बड़ा खतरा भी रहा है।

-गेब्रियल गार्सिया मार्क्वेज

प्रकाशक की ओर से

फिदेल कास्त्रो रुज का जन्म भूतपूर्व ओरिएण्ट प्रान्त के बाइरन गाँव में 13 अगस्त, 1926 को हुआ था। उनका परिवार खुशहाल जमीन्दार परिवार था। उन्होंने सेण्टीयागो डी क्यूबा और हवाना स्थित अभिजात कैथोलिक प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा पायी और 1950 में हवाना विश्वविद्यालय के लॉ स्कूल से स्नातक की डिग्री ली।

विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान वे भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने वाले एक छात्र समूह से जुड़े। 1947 में वे क्यूबन पीपुल्स पार्टी (जिसे ऑर्थोडॉक्स पार्टी के नाम से भी जाना जाता था) के सदस्य बने और उसके वाम-धड़े का नेतृत्व किया। उसी साल वे डोमिनिकन गणराज्य में ट्रुजिल्लो की तानाशाही के खिलाफ एक सशस्त्र अभियान में शामिल हुए, हालाँकि अभियानकर्ता अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिये क्यूबा से निकल पाने में असफल रहे। एक छात्र नेता के बतौर कास्त्रो वेनेज्युएला, पनामा और कोलम्बिया में एक साम्राज्यवाद-विरोधी लातिन अमरीकी छात्र कांग्रेस के आयोजन के लिए समर्थन जुटाने के लिए गये। इस कांग्रेस को उसी दिन बुलाया गया था जिस दिन अमरीका द्वारा प्रायोजित 'अमरीकी राज्यों के संगठन' का स्थापना सम्मेलन होने वाला था। कोलम्बिया में उन्होंने अप्रैल, 1948 में बगोटा में हुए जनउभार में भी हिस्सा लिया।

10 मार्च, 1952 को फल्गेंसियो बातिस्ता द्वारा तख्तापलट के बाद कास्त्रो अमरीका समर्थित बातिस्ता तानाशाही के खिलाफ एक क्रान्तिकारी संगठन बनाने और आम बगावत की तैयारी में लग गये। 26 जुलाई, 1953 को उन्होंने सेण्टीयागो डी क्यूबा स्थित मोनकाडा सैनिक गैरीसन के विरुद्ध एक असफल आक्रमण को संगठित किया और उसका नेतृत्व किया। अपने दो दर्जन से ज्यादा साथियों के साथ वे पकड़ लिये गये, उनपर मुकदमा चला और उन्हें जेल में डाल दिया गया। मोनकाडा हमले के दौरान और तत्काल बाद बातिस्ता की सेना ने 60 से भी ज्यादा क्रान्तिकारियों की हत्या की। जेल में बिताये दिनों में कास्त्रो ने मुकदमे के दौरान अपने बचाव में दिये गये भाषणों को सम्पादित करके 'इतिहास मुझे सही साबित करेगा' शीर्षक पर्चा तैयार किया, जिसकी लाखों प्रतियाँ बाँटी गयी और जो 26 जुलाई आन्दोलन का कार्यक्रम बन गया।

हालाँकि उन्हें 15 सालों के कारावास की सजा सुनाई गयी थी लेकिन बढ़ते जनान्दोलन के चलते उन्हें और उनके साथियों को 22 महीने के बाद ही मई, 1955 में रिहा कर दिया गया।

7 जुलाई, 1955 को कास्त्रो मैक्सिको चले गये जहाँ क्यूबा में सशस्त्र क्रान्ति के उद्देश्य से उन्होंने गुरिल्ला अभियान का संगठन करना शुरू कर दिया। 2 दिसम्बर, 1956 के दिन केबिन क्रूजर ग्रानमा पर सवार अपने 81 साथियों के साथ जिनमें उनके भाई राउल, चे ग्वेरा, केमिलो सीनफुगोस, जुआन अलमीडा और जीसस मोण्टाने शामिल थे, कास्त्रो क्यूबा के तट पर पहुँचे। अगले 2 सालों तक कास्त्रो ने 26 जुलाई के आन्दोलन के केन्द्रीय नेतृत्व की जिम्मेदारी सम्भालने के साथ-साथ विद्रोही सेना की कार्रवाइयों को भी निर्देशित किया। शुरुआती असफलता के बाद गुरिल्ला अपनी शक्ति का पुनर्गठन करने में सफल रहे और 1958 के अन्तिम दिनों तक संघर्ष को सिएरा माएस्त्रा पहाड़ियों से शुरू करके पूरे द्वीप पर सफलतापूर्वक फैला दिया।

1 जनवरी, 1959 को बातिस्ता क्यूबा छोड़कर भाग गया। कास्त्रो द्वारा किये गये एक आह्वान की प्रतिक्रिया स्वरूप लाखों क्यूबाइयों ने एक आम बगावत और आम हड़ताल शुरू कर दी जिसने क्रान्ति की जीत पर मुहर लगा दी। 8 जनवरी, 1959 को क्यूबा की विजयी विद्रोही सेना के कमाण्डर इन चीफ के तौर पर विजेता फिदेल कास्त्रो हवाना पहुँचे। 13 फरवरी, 1959 को वे क्यूबा के प्रधानमंत्री बने। दिसम्बर, 1976 में राज्य-परिषद और मंत्री-परिषद के अध्यक्ष बनने तक, वे इसी पद पर बने रहे।

1965 में क्यूबाई कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के बाद वे केन्द्रीय कमेटी के पहले सचिव बने और अभी तक इस पद पर हैं।

प्रस्तुत पुस्तिका क्यूबाई क्रान्ति के इसी महानायक, फिदेल कास्त्रो के व्यक्तित्व के बहुत से अनछुए पहलुओं को उद्घाटित करती है, जिन्हें गेब्रियल गार्सिया मार्क्वेज ने अपनी सशक्त लेखनी से जीवन्त किया है।

पुस्तिका के बारे में आपके सुझावों और विचारों की प्रतीक्षा रहेगी।

गार्गी प्रकाशन

फिदेल : एक निजी शब्द चित्र

एक हफ्ते तक क्यूबा की यात्रा पर साथ रहे अपने एक विदेशी अतिथि के बारे में फिदेल ने कहा था : ''वह आदमी कितना बातूनी है–वह तो मुझसे भी ज्यादा बातें करता है! '' फिदेल को थोड़ा भी जानने वालों के लिये यह समझना मुश्किल नहीं कि यह अतिशयोक्ति है, बहुत बड़ी अतिशयोक्ति, क्योंकि बातचीत की आदत के मामले में उनकी टक्कर का कोई दूसरा आदमी मिलना असम्भव है।

शब्द के प्रति उनका समर्पण लगभग जादुई है। क्रान्ति की शुरुआत के समय, हवाना में प्रवेश करने के बमुश्किल एक हफ्ते बाद, वे बिना रुके सात घण्टे तक टेलीविजन पर बोलते रहे। हो सकता है कि यह एक विश्व कीर्तिमान हो। पहले कुछ घण्टे तक तो उनकी आवाज की सम्मोहक शक्ति से अपरिचित हवाना के लोग परम्परागत तौर पर बैठ कर भाषण सुनते रहे। लेकिन ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, वे अपनी-अपनी दिनचर्या में लग गये। काम भी करते रहे और भाषण भी सुनते रहे।

मैं उसके एक ही दिन पहले काराकास के पत्रकारों की एक टोली के साथ वहाँ पहुँचा था और हमने अपने होटल के कमरे में भाषण सुनना शुरू किया। बिना किसी रुकावट के हम लोग सीढ़ियों पर, बाजार जाते हुए, टैक्सी में, फूलों से लदी कॉफी हाऊस की खुली छत पर, कँपकँपाते वातानुकूलित शराबखानों में और यहाँ तक कि सड़क पर घूमते हुए भी लगातार भाषण सुनते रहे जहाँ खुली खिड़कियों से रेडियो की तेज आवाज गूँजती हुई आ रही थी। शाम तक हमने अपने सभी पूर्वनिर्धारित काम पूरे कर लिये और भाषण का एक शब्द भी नहीं छूटा।

हममें से जो भी लोग फिदेल कास्त्रो को पहली बार सुन रहे थे, उनका दो बातों ने ध्यान आकृष्ट किया। पहला, अपने श्रोताओं को मोहित करने की उनकी अद्भुत शक्ति और दूसरा, उनकी नाजुक आवाज। उनकी आवाज फटी हुई थी जो कभी-कभी फुसफुसाहट में बदल जाती थी। उनकी आवाज को सुनकर एक डॉक्टर ने कहा कि अमेजन नदी की तरह निर्बाध बहने वाला अपना मैराथन भाषण न दें, तो भी, पाँच सालों

के अन्दर फिदेल कास्त्रो अपनी आवाज खो देंगे। कुछ ही दिनों बाद 1962 के अगस्त में इस भविष्यवाणी की पहली भयावह पुष्टि तब होती महसूस हुई जब उन्होंने अमरीकी कम्पनियों के राष्ट्रीयकरण की घोषणा करते हुए भाषण दिया और उसके बाद खामोश हो गये। लेकिन वह एक क्षणिक झटका था जो फिर कभी नहीं आया। उस घटना के बाद अब तक 26 वर्ष गुजर गये हैं। फिदेल कास्त्रो आज 61* वर्ष के हैं और उनकी आवाज में पहले ही जैसा उतार-चढ़ाव अब भी मौजूद है। लेकिन यही चीज, शब्दोच्चारण की सूक्ष्मकला के मामले में आज भी उनका अत्यन्त उपयोगी और प्रभावी साधन है।

साधारण बातचीत में भी तीन घण्टे का समय लगाना उनके लिये आम बात है। तीन घण्टे एकमुश्त! समय उनकी रफ्तार से चलता है। वे अपने दफ्तर में कैद रहने वाले कोई अकादमिक नेता नहीं हैं। जहाँ कहीं भी समस्या हो, उसे ढूँढ निकालने के प्रयास में उन्हें अपनी विशेष कार में, बिना निगरानी के लिए साथ चलती मोटरसाइकिलों की धड़धड़ाहट के, हवाना की सूनी सड़कों या आसपास के इलाके की किसी सड़क पर कभी भी, यहाँ तक सुबह होने से पहले भी देखा जा सकता है। इन्हीं चीजों ने उनके बारे में इस किंवदन्ती को जन्म दिया है कि वे अकेले भटकने वाले, अस्त-व्यस्त और स्वच्छन्द,अनिद्रा रोगी हैं जो किसी भी वक्त टपक पड़ते हैं और अपने मेजबान को भोर होने तक जगाये रखते हैं।

क्रान्ति के बाद के कुछ वर्षों के दौरान उनकी इस छवि के पीछे कुछ सच्चाई थी, जब सियेरा माएस्त्रा के दिनों की कुछ आदतें उनमें बची हुई थीं। न सिर्फ इसलिए कि उनके भाषण काफी देर तक चलते थे, बल्कि इसलिए भी क्योंकि 15 वर्षों तक न तो वास्तव में उनका कोई घर था, न कोई दफ्तर और न ही कोई सुनिश्चित दिनचर्या। वे जहाँ होते थे सरकार की कुर्सी भी वहीं होती थी और सत्ता भी उनकी घुमक्कड़ी के कारण संयोग पर ही निर्भर थी। अब तो काफी कुछ बदल गया है। अपने उतावलेपन की आदत से बिना विचलित हुए उन्होंने अन्ततः अपने जीवन पर एक हद तक व्यवस्था आरोपित कर ली है। पहले दिन और रात जैसे उनके साथ-साथ चलते, केवल उन कुछ क्षणों को छोड़कर जब थकान से निढाल होकर यहाँ-वहाँ कुछ देर के लिए वे झपकी मार लेते थे। अब वे अपने लिये कम से कम छः घण्टे निर्विघ्न नींद की अनुमति चाहते हैं, हालाँकि वे खुद भी यह नहीं जानते कि यह कब प्राप्त होगी? जैसी परिस्थिति हो उसी के अनुरूप वे रात 10 बजे से अगली सुबह 7 बजे के बीच कभी भी सोने चले जाते हैं।

*यह लेख 1987 में लिखा गया था।

राज्यसभा अध्यक्ष के अपने कार्यालय में, जहाँ करीने से सजी एक मेज है, कच्चे चमड़े के आरामदायक फर्नीचर और उनकी विस्तृत रुचि को दर्शाती किताबों की एक अलमारी है जिसमें जल-संवर्धन पर शोध-प्रबन्ध से लेकर रोमान्टिक उपन्यास तक भरे हुए हैं, वे रोजमर्रा के कामों को निबटाने में कई घण्टे लगाते हैं। रोज आधा डिब्बी सिगार पीने वाले फिदेल ने सिर्फ इसलिये सिगरेट पीना छोड़ दिया ताकि देश में धूम्रपान के खिलाफ लड़ाई का नैतिक अधिकार हासिल कर सकें–एक ऐसे देश में जहाँ क्रिस्टोफर कोलम्बस ने तम्बाकू की खोज की थी, जो आज भी क्यूबा के राजस्व का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

प्रतिकूल परिस्थितियों में रहने के कारण उनका वजन तूफानी गति से बढ़ने लगा जिसके चलते उन्हें निश्चित खुराक अपनानी पड़ी। यह उनके लिए बहुत बड़ा त्याग है क्योंकि उन्हें काफी तेज भूख लगती है और खास वैज्ञानिक उत्साह के साथ नये-नये तरह के व्यंजन बनाने में उन्हें मजा आता है। किसी रविवार के दिन उन्होंने अपने को छूट दी, दोपहर में भरपूर भोजन किया और 18 कलछी आइसक्रीम खा गये। हालाँकि आमतौर पर वे उबली हुई सब्जी के साथ एक टुकड़ा मछली पर गुजारा करते हैं और वह भी नियम से सुबह-शाम नहीं करते, बल्कि जब उन्हें काफी तेज भूख लगती है, तभी खाते हैं। उनकी शारीरिक स्थिति काफी अच्छी है, क्योंकि वे हर रोज कुछ घण्टे व्यायाम करते हैं और कभी-कभी तैरने भी जाते हैं। वे सिर्फ एक गिलास कड़वी व्हिस्की लेते हैं और उसे एक ही घूँट में पी जाते हैं । उन्होंने स्पेगेती (इटालियन पकवान) के प्रति अपनी कमजोरी पर काबू पा लिया है जिसे क्रान्ति के प्रथम संदेशवाहक मोनसिग्नर सिसेरे साच्ची ने उन्हें पकाना सिखाया था। ग्रीक मिथकीय चरित्र होमर की तरह आने वाला गुस्से का क्षणिक दौरा अब अतीत की बात हो गया है और अब वे गुस्सैल स्वभाव को अपार धैर्यपूर्ण व्यवहार में बदलने की कला सीख गये हैं।

कुल मिलाकर एक लौह अनुशासन, लेकिन किसी भी हालत में वह कभी पर्याप्त नहीं रहता। कारण यह कि समय की अपरिहार्य कमी के चलते वे अनियमित दिनचर्या से बच नहीं पाते और उनकी कल्पना का आवेग किसी भी क्षण उन्हें भटकाकर ले जा सकता है। उनके साथ रहते हुए आप यह तो जानते होते हैं कि कहाँ से शुरू करना है लेकिन यह नहीं जान सकते कि बात कहाँ खत्म होगी। उनके साथ रहते हुए यह कोई असामान्य बात नहीं कि किसी रात आप उनके साथ हवाई जहाज में उड़ते हुए किसी गुप्त स्थान पर पहुँच जायें या किसी शादी में मुख्य बाराती बन जायें, विस्तीर्ण समुद्र में लॉब्स्टर झींगा पकड़ रहे हों या कामागुए में बनी उत्कृष्ट फ्रेन्चचीज चख रहे हों।

बहुत पहले उन्होंने कहा था, ''आराम करना सीखना उतना ही जरूरी है जितना काम करना सीखना।'' लेकिन उनके काम का तरीका बिल्कुल न्यारा है और उसके दौरान शायद बातचीत करना वर्जित नहीं। एक बार लगभग आधी रात को किसी गम्भीर काम से उन्हें फुर्सत मिली। थकान उनके चेहरे पर साफ झलक रही थी। लेकिन उसके बाद दो घण्टे तैरकर जब वे भोर से पहले वापस आये तो बिल्कुल तरोताजा थे। निजी दावतें उनके स्वभाव से मेल नहीं खातीं क्योंकि वे उन बिरले क्यूबाइयों में से हैं जो गाना या नाचना नहीं जानते। मगर जिन कुछ एक पार्टियों में वे शामिल होते हैं उनकी रंगत ही बदल जाती है। शायद उन्हें इसका अहसास भी न हो। शायद उन्हें इसका अहसास नहीं कि उनकी उपस्थिति का कितना भव्य प्रभाव होता है—वे एकदम से पूरी पार्टी पर छा जाते हैं हालाँकि वे उतने लम्बे या मोटे नहीं हैं, जितने पहली झलक में दिखते हैं। मैंने देखा है कि बड़े से बड़ा आत्मविश्वासी व्यक्ति भी उनके सामने शान्त दिखने की कोशिश में या अति आत्मविश्वास ओढ़ने के चक्कर में अपना सन्तुलन खो देता है। वह कल्पना भी नहीं कर पाता कि वे भी उतने ही त्रस्त होते हैं जितने वे लोग और इस पर लोगों का ध्यान न जाये इसके लिए उन्हें पहले से ही प्रयास करना पड़ता है। मेरा हमेशा यह मानना रहा है कि वे अपनी कार्रवाइयों के बारे में बताते हुए अक्सर बहुवचन का जो प्रयोग करते हैं, वह उतना भव्य नहीं जितना प्रतीत होता है, बल्कि उनके शर्मीलेपन को छुपाने का एक काव्यात्मक बहाना है।

अवश्यम्भावी तौर पर, नृत्य बाधित हो जाता है, संगीत थम जाता है, भोजन टल जाता है और जल्दी ही शुरू होने वाली बातचीत में हिस्सा लेने के लिये भीड़ उनके इर्द-गिर्द इकट्ठी हो जाती हैं। वे इसी हालत में बिना कुछ खाये-पिये, जितनी देर चाहें, खड़े रह सकते हैं। कभी-कभी वे सोने से पहले देर रात को किसी दोस्त के घर जाकर दरवाजा खटखटायेंगे, बिना पूर्व सूचना के वहाँ हाजिर हो जायेंगे और कहेंगे कि सिर्फ पाँच मिनट वहाँ रुकेंगे और ये बात वे इतनी गम्भीरता से कहेंगे कि बैठेंगे भी नहीं। धीरे-धीरे वे बातचीत के द्वारा फिर से उत्साहित हो जायेंगे और कुछ देर बाद आराम से कुर्सी में ढह जायेंगे और फिर यह कहते हुए अपने पैर पसार देंगे, ''काफी ताजगी महसूस हो रही है।'' ऐसा ही होता है—बातचीत से थके होने पर बातचीत करके ही उन्हें आराम मिलता है।

एक बार उन्होंने कहा : ''मैं अगले जन्म में लेखक बनना चाहता हूँ।'' सच तो यह है कि वे अच्छा लिखते हैं और इसमें उन्हें मजा आता है। यहाँ तक कि चलती कार में भी वे अपनी डायरियों में, जिन्हें वे हमेशा अपने साथ रखते हैं, अपने दिमाग

में आने वाले विचारों को या कभी-कभी व्यक्तिगत पत्र भी लिखते रहते हैं। उनकी डायरियाँ साधारण कागज की होती हैं, उनकी जिल्द नीले प्लास्टिक की होती हैं और साल-दर साल उनकी निजी फाइलों में इकट्ठी होती गयी हैं। उनकी लिखावट छोटी और उलझी-उलझी होती है, हालाँकि पहली झलक में वह स्कूली बच्चे जैसी लगती है। वे किसी पेशेवर लेखक की तरह लिखने का प्रयास करते हैं। एक-एक वाक्य को कई-कई बार सुधारते हैं। काट कर उसे हाशिये पर दुबारा लिखने की कोशिश करते हैं और उनके लिए यह कोई असामान्य बात नहीं कि किसी सटीक शब्द की तलाश में वे कई-कई दिन लगा देते हैं। तब तक शब्दकोश उलटते रहते हैं या आने-जाने वालों से पूछते रहते हैं, जब तक कि उन्हें मनचाहा शब्द नहीं मिल जाता।

70 के दशक में उन्हें अपने भाषणों को लिखने की आदत पड़ गयी। वे इतना धीरे-धीरे और सावधानी से लिखते कि उनके भाषण लगभग यांत्रिक होते थे। लेकिन यही शुद्धता उन भाषणों को बर्बाद कर देती थी। जब फिदेल कास्त्रो उन्हें पढ़ते थे उनका व्यक्तित्व बदला-बदला सा लगता था। अलग सुर, अलग शैली यहाँ तक कि उनकी उत्कृष्ट आवाज भी बदल जाती थी। विस्तीर्ण क्रान्ति चौक पर 5 लाख लोगों के सामने लिखित भाषण के चौखटे में अक्सर उनका दम घुटने लगता और वे हर थोड़ी देर के बाद मूल भाषण से हट कर बोलने लगते। एक अन्य मौके पर उन्होंने पाया कि टाइपिस्ट ने गलती कर दी है और उसे ठीक कर के बोलते जाने के बजाय वे रुक कर बड़े इत्मिनान से उसे कलम से ठीक करने लगे । लिखित भाषणों को जीवन्त बनाने की तमाम कोशिशों और कई मामलों में सफल होने के बावजूद उन बँधे-बँधाये भाषणों से वे काफी निराश हो गये। उनमें वे सभी बातें जो वे कहना चाहते थे अच्छी तरह कही गयी होती थीं, लेकिन उनमें जीवन की सर्वोत्तम प्रेरणा—जोखिम उठाने का आवेश ही नहीं होता था।

तत्काल भाषण देने का तरीका उनके लिये शायद सबसे अनुकूल बैठता है, हालाँकि शुरू में उन्हें थोड़ी झिझक होती है, जिस पर कुछ ही लोगों का ध्यान जाता है, लेकिन इससे वे खुद इनकार नहीं करते। कुछ वर्ष पहले किसी सार्वजनिक समारोह में शामिल होने के लिये मुझे भेजे गये अपने एक सन्देश में उन्होंने लिखा था, ''मंच के आतंक से मुक्त रहने की कोशिश करना, हालाँकि मैं खुद ही ऐसा नहीं कर पाता।'' किसी खास मौके पर ही वे नोट लिखी पर्ची का सहारा लेते हैं जिसे वे भाषण देने से पहले बड़ी सहजता के साथ जेब से निकालते हैं और हमेशा अपनी आँखों के सामने रखे रहते हैं। वे हमेशा बहुत ही धीमी आवाज में शुरू करते हैं, काफी हिचकते हुए

एक अनिश्चित रास्ते की धुंध में रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं, धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ने की कोशिश करते हैं, जब तक कि वे उत्तेजनापूर्ण ढंग से नहीं बोलने लगते और श्रोताओं को पूरी तरह बाँध नहीं लेते। तब श्रोताओं और उनके बीच एक प्रकार का आदान-प्रदान शुरू हो जाता है, जो एक-दूसरे को उत्तेजित करता है और उनके बीच एक प्रकार के द्वन्द्वात्मक मेलमिलाप को जन्म देता है। इस असह्य तनाव में ही उनका उल्लास निहित होता है। यही उनकी प्रेरणा है, यही मनोहरता की अत्यन्त सम्मोहक और स्तब्धकारी अवस्था है, जिसको वही नकार सकता है जिसे खुद इस अनुभव से गुजरने का गौरव प्राप्त नहीं हुआ हो।

शुरू के दिनों में सार्वजनिक समारोह उनके पहुँचने पर ही प्रारम्भ होता था, हालाँकि उनका पहुँचना उतना ही अनिश्चित होता था, जितनी बरसात। अब कुछ वर्षों से वे बिल्कुल ठीक समय पर पहुँच जाते हैं और उनके भाषण की अवधि श्रोताओं के मिजाज पर निर्भर होती है। अनन्तकाल तक चलने वाले उनके शुरुआती दिनों के भाषण अब अतीत की बात हो गये हैं और अब उनके बारे में केवल किंवदन्तियाँ ही रह गयी हैं। कारण यह है कि उस दौर में जिन बातों की काफी व्याख्या करनी पड़ती थी, वे अब सर्वज्ञात हैं और फिदेल कास्त्रो की अपनी शैली भी भाषणबाजी के निरन्तर अभ्यास के द्वारा काफी चुस्त हो गयी है। उन्हें कम्युनिस्ट विद्वता के घिसे-पिटे नारों को दुहराते नहीं सुना जाता और न ही वे कर्मकांडी द्वन्द्ववाद की लुप्तप्राय भाषा का प्रयोग करते हैं, जिसका बहुत पहले ही यथार्थ से नाता टूट गया है और अब केवल प्रशंसात्मक और अभिनन्दन-ग्रंथीय पत्रकारिता में ही उसकी झलक दिखायी देती है, जिसका मकसद मानों किसी बात को समझाना न होकर उसे छुपाना हो। वे उच्चकोटि के जड़सूत्रवाद विरोधी हैं जिनकी रचनात्मक कल्पनाशीलता अधर्म के रसातल पर मँडराती रहती है। वे न तो बातचीत में और न ही मंच से शायद ही कभी दूसरों के उद्धरण देते हों, सिवाय जोस मार्ती के जो उनके पसन्दीदा लेखक हैं। वे उनकी रचनाओं के 28 खण्डों को पूरी तरह जानते हैं और उनके विचारों को मार्क्सवादी क्रान्ति के रक्तरंजित प्रवाह में समाविष्ट करने में निपुण रहे हैं। लेकिन उनके खुद के दर्शन का निचोड़ शायद उनका इस बात पर दृढ़ विश्वास है कि जनकार्य के मामले में सबसे बड़ी बात है—हर एक व्यक्ति के साथ लगाव होना।

यही कारण है कि सीधे सम्पर्क बनाने में उनका दृढ़ विश्वास है। उनके सबसे कठिन भाषण भी अनौपचारिक बातचीत जैसे लगते हैं। वैसे ही, जैसे वे विश्वविद्यालयों के प्रांगणों में क्रान्ति के प्रारम्भिक दिनों में छात्रों के साथ बातचीत किया करते थे। वास्तव

में, खासतौर पर हवाना के बाहर, यह किसी के लिये असामान्य बात नहीं कि किसी आमसभा के दौरान वे भीड़ में देखकर उन्हें बुलाने के लिए चिल्लाने लगें और वहीं से चीख-चीख कर उनसे बतियाने लगें। हर अवसर के अनुरूप उनके पास अलग-अलग भाषा और समझाने का तरीका है जो इस बात पर निर्भर होता है कि सम्बन्धित व्यक्ति किसान है या वैज्ञानिक, विद्यार्थी है या राजनेता, लेखक है या विदेशी अतिथि। अपनी व्यापक और विविध जानकारी के बल पर, जो उन्हें आसानी से कोई भी माध्यम अपनाने में सक्षम बनाती है, वे हर एक के स्तर पर पहुँच सकते हैं। लेकिन उनका व्यक्तित्व इतना जटिल और मनमौजी है कि उनमें से कोई भी एक ही मुलाकात में उनके बारे में भिन्न-भिन्न राय बना सकता है।

एक बात तय है—वे जहाँ कहीं भी हों, जिस हाल में और जिसके भी साथ हों, फिदेल कास्त्रो वहाँ जीतने के लिये होते हैं। मुझे नहीं लगता कि असफल होने पर जैसी हालत उनकी होती है वैसी दुनिया में किसी और की होती होगी। पराजय का सामना होने पर, यहाँ तक कि रोजमर्रा की जिन्दगी के छोटे से छोटे मामले में भी, वे अपनी एक निजी तर्क-पद्धति का पालन करते नजर आते हैं। वे उस पराजय को मानेंगे ही नहीं और जब तक वे शर्तों को पलट कर उसे जीत में नहीं बदल डालेंगे, तब तक एक क्षण के लिए भी शान्त नहीं रहेंगे। लेकिन जो कुछ भी हो और जहाँ कहीं भी हो, हर चीज एक अनन्त वार्तालाप की परिधि में ही होती है।

विषय कोई भी हो सकता है जो श्रोता की रुचि के अनुरूप हो लेकिन जब वे खुद किसी एक विषय को लेते हैं तो अक्सर इसका उल्टा भी होता है। ऐसा उसी दौरान होता है जब वे किसी ऐसे विचार का अन्वेषण कर रहे हों, जो उन्हें परेशान कर रहा हो और जब वे एक बार किसी चीज की तह तक जाने का निश्चय कर लेते हैं तो जैसे आवेश में वे होते हैं, वैसा कोई और नहीं हो सकता। कोई ऐसी योजना नहीं होगी, चाहे वह भारी-भरकम हो या बहुत छोटी, जिसे वे तीक्ष्ण भाव से हाथ में न लेते हों, खासतौर से तब जब वे विषम परिस्थिति का सामना कर रहे हों। ऐसे समय में वे जितनी बेहतर हालत में होते हैं, उनकी मन:स्थिति जितनी बेहतर होती है और वे जितना अधिक जीवन्त दिखते हैं वैसे कभी और नहीं होते। उन्हें अच्छी तरह जानने वाले किसी व्यक्ति ने एक बार उन पर टिप्पणी की थी, ''मामला कुछ गड़बड़ है, तभी आप इतने उल्लसित दिखायी दे रहे हैं।''

हालाँकि उनसे पहली बार मिले एक विदेशी अतिथि ने कुछ वर्षों पहले मुझसे कहा था, ''फिदेल बूढ़े हो रहे हैं, पिछली रात उन्होंने एक ही विषय को लगभग सात

बार दुहराया।'' मैंने उन्हें बताया कि ये झक्की जैसी पुनरावृत्तियाँ उनके काम करने के तरीकों में से एक हैं। उदाहरण के लिये, लातिन अमरीका पर विदेशी कर्जे का मुद्दा दो साल पहले उनकी बातचीत में पहली बार आया और तबसे लगातार विकसित होता गया, इससे नयी-नयी शाखाएँ फूटती गयीं और तब तक यह अधिकाधिक गहन होता गया, जब तक कि यह बार-बार आने वाले दु:स्वप्न जैसी कोई चीज नहीं हो गया। पहली बात जो उन्होंने किसी सरल अंकगणित के निष्कर्ष की तरह कही, वह यह थी कि ये कर्ज चुकता करने लायक नहीं हैं। उस वर्ष मैंने हवाना के जो तीन दौरे किये थे, उस बीच उनसे इस बारे में टुकड़े-टुकड़े में जो बातें हुईं, वे ये थीं—विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था पर इस कर्ज का दुष्प्रभाव, इसका राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव, अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों पर इसका निर्णायक प्रभाव, एक एकात्मक लातिन अमरीकी नीति के लिये इसका दूरदर्शी महत्व।

अन्तत: उन्होंने हवाना में विशेषज्ञों की एक बड़ी सभा आयोजित की और उसमें एक भाषण दिया जिसमें उनकी पूर्ववर्ती बातचीत में आने वाले सभी महत्वपूर्ण सवाल शामिल थे। इसके बाद उन्होंने इस विषय पर अपना एक समग्र दृष्टिकोण बना लिया जिसकी पुष्टि आने वाला समय ही करेगा।

मुझे ऐसा लगता है कि एक राजनेता के रूप में उनका सबसे विशिष्ट गुण है —किसी खास समस्या के विकास की विवेचना करने, उसे समग्र रूप से समझने और उसके दूरगामी परिणामों तक को जान लेने की उनकी क्षमता। मानो वे पानी में तैरते किसी हिमशैल के केवल चमकदार ऊपरी सिरे को ही नहीं देखते बल्कि उसके पानी के अन्दर छिपे आठ में से सात हिस्से को भी देख लेते हैं। हालाँकि यह क्षमता केवल सहज बोध से ही संचालित नहीं होती है बल्कि श्रमसाध्य और दृढ़निश्चयी विवेक के द्वारा ही मुमकिन है। बातचीत में हिस्सा लेने वाला कोई परिश्रमी व्यक्ति ही उनके किसी विचार के भ्रूण का पता लगा सकता है और महीनों के निरन्तर वार्तालाप के दौरान उसके विकास का अनुगमन कर सकता है, जब तक कि वह अपने सम्पूर्ण रूप में अन्तिम तौर पर सार्वजनिक नहीं हो जाता, जैसा कि विदेशी कर्ज वाले मामले में हुआ था। जब वह विषय चुक जाता है तब जैसे कि एक जीवन्त चक्र पूरा हो गया हो, वे उसे हमेशा के लिए फाइल में बन्द कर देते हैं।

इस प्रकार के मौखिक मिल के लिये निश्चय ही, सूचनाओं के सतत प्रवाह की सहायता की जरूरत होती है, जिसे अच्छी तरह चबाया और पचाया गया हो। उनका सर्वोत्तम सहायक है उनकी याददाश्त और वे अपने भाषणों और निजी बातचीत को

जबरदस्त तार्किकता और अविश्वसनीय रफ्तार के अंकगणितीय संचालन के जरिये जीवन्त बनाने में इस याददाश्त का हद से ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। सूचना-संग्रह का यह काम उनके उठते ही शुरू हो जाता है। नाश्ता करते हुए वे दुनियाभर के अखबारों के लगभग 200 पन्ने पढ़ जाते हैं। दिन के समय अनवरत भाग-दौड़ के बावजूद हर जगह उन्हें जरूरी सूचनाएँ मिलती रहती हैं। वे खुद हिसाब लगाकर बताते हैं कि हर दिन उन्हें लगभग 50 दस्तावेज पढ़ने होते हैं। इसमें उनकी सरकारी सेवाओं और उनके अतिथियों की रिपोर्टों के साथ हर उस चीज को भी जोड़ना जरूरी है जो उनकी अदम्य जिज्ञासा के अनुरूप हो। इस सम्बन्ध में कोई भी अतिशयोक्ति सच्चाई के लगभग करीब होगी, जैसे कि हवाई जहाज में यात्रा करने जैसी दुष्कर स्थिति में भी वे पढ़ लेते हैं।

वे हवाई यात्रा पसन्द नहीं करते और ऐसा तभी करते हैं जब कोई विकल्प नहीं होता। जब वे हवाई यात्रा पर होते हैं तब हर बात जानने की अपनी बेचैनी के कारण वे एक बुरे यात्री होते हैं। न तो वे पढ़ते हैं और न ही सोते हैं। मुश्किल से वे कुछ खाते हैं। जब भी उन्हें कोई शक होता है वे चालक दल से विमान संचालन का नक्शा माँगते हैं, उनसे यह बताने को कहते हैं कि यही मार्ग क्यों चुना गया दूसरा क्यों नहीं? टरबाइन का शोर बदल क्यों रहा है? अच्छे मौसम के बावजूद विमान ऊपर-नीचे क्यों हो रहा है? जवाब सही होना जरूरी है क्योंकि असावधानी से बोले गये वाक्यों में थोड़ी भी परस्पर विरोधी बात हो तो वे उसे जान सकते हैं। सूचना का दूसरा महत्वपूर्ण स्रोत निश्चय ही किताबें हैं। फिदेल कास्त्रो के विरोधियों द्वारा गढ़ी गयी उनकी छवि से सबसे कम मेल खाने वाला उनके व्यक्तित्व का पहलू है उनका एक व्यग्र पाठक होना। कोई यह नहीं बता सकता कि उन्हें पढ़ने का समय कब मिलता है या इतना अधिक और इतनी जल्दी पढ़ने के लिये वे क्या तरीका अपनाते हैं? हालाँकि वे इस बात पर जोर देते हैं कि इसमें कोई खास बात नहीं है। उनकी कार में चाहे वह प्रागैतिहासिक ओल्डस्मोबाइल हो या सोवियत जिल्स या फिर आजकल की मर्सिडिसीज, रात में उनके पढ़ने के लिये रोशनी की व्यवस्था जरूर होती है। कई बार उन्होंने भोर होने से पहले कोई किताब उठायी और सुबह तक उस पर अपनी टिप्पणी भी लिख दी। वे अंग्रेजी पढ़ते हैं लेकिन बोलते नहीं। बहरहाल वे स्पेनिश भाषा में पढ़ने को तरजीह देते हैं और किसी भी पहर कोई भी लिखित सामग्री पढ़ने को तैयार रहते हैं जो हाथ में पड़ जाये। जब उन्हें किसी ऐसी नयी किताब की जरूरत होती है जिसका अभी अनुवाद नहीं हुआ हो तो वे उसका अनुवाद करवा लेते हैं। उनके एक डॉक्टर दोस्त ने शिष्टाचारवश विकलांग-विज्ञान (ऑर्थोपेडिक्स) पर अपना शोधप्रबन्ध उन्हें भेंट किया जो उसी समय छप कर आया था। दरअसल उसने सोचा भी नहीं था कि वे उसे पढ़ेंगे

लेकिन हफ्ते भर बाद उनका एक पत्र उसे मिला जिसमें टिप्पणियों की एक लम्बी सूची थी। वे आर्थिक और ऐतिहासिक विषयों के अभ्यस्त पाठक हैं। जब उन्होंने ली इयालोक्का के संस्करण पढ़े तो उन्होंने ऐसी कई अविश्वसनीय गलतियों को खोज निकाला कि उनकी जाँच के लिये न्यूयॉर्क से अंग्रेजी संस्करण मँगवाकर उसे स्पेनिश संस्करण के साथ मिलाकर देखना पड़ा। वास्तव में अनुवादक ने दोनों भाषाओं में बिलियन (अरब) शब्द के अर्थ को उलझा दिया था। वे साहित्य के एक अच्छे पाठक हैं और ध्यानपूर्वक उसे समझते हैं। मैंने अपने विवेक से उन्हें औपचारिक दस्तावेजों के प्रतिकारक के रूप में सर्वाधिक बिकने वाले चलताऊ साहित्य का आदी बनाया और उन्हें इस सम्बन्ध में ताजा जानकारी भी देता रहता हूँ।

फिर भी, उनकी सूचना का तात्कालिक और अत्यन्त फलदायी स्रोत आज भी वार्तालाप ही बना हुआ है। उन्हें जल्दी-जल्दी पूछताछ करने की आदत है। जो रूसी गुड़िया **'मात्रिउश्का'** से मेल खाती है जिसमें एक गुड़िया के अन्दर से उसी की तरह की उससे छोटी गुड़िया निकलती, फिर दूसरी, तीसरी और तब तक निकलती रहती है जब तक सबसे छोटी न बच जाये। वे तात्कालिक लहर के रूप में एक के बाद एक सवाल पूछते जाते हैं।, जब तक कि वे क्यों के क्यों का और अन्तिम क्यों का पता नहीं लगा लेते। उनसे बात करने वाले को ऐसा महसूस करना लाजमी है मानो उसे धर्माधिकरण की परीक्षा में धकेल दिया गया हो। एक बार जब लातिन अमरीका के एक अतिथि ने अपने देश में चावल की खपत के बारे में हड़बड़ी में गलत आँकड़ा दिया तो उन्होंने मन ही मन हिसाब लगाया और बोले ''कितनी अजीब बात है हर आदमी दिन भर में चार पौण्ड चावल खा जाता है।'' समय के साथ आप जान जायेंगे कि उनका सबसे उत्कृष्ट तरीका है–उन चीजों के बारे में जाँच पड़ताल करना जिन्हें वे पहले से ही जानते हैं ताकि वे अपनी जानकारी को तथ्यों से पुष्ट कर सकें। कुछ मामलों में तो वे ऐसा इसलिए भी करते हैं ताकि जिससे वे बात कर रहे हैं, उसकी योग्यता का पता लगा सकें और उसके साथ उचित व्यवहार कर सकें। जानकारी पाने का कोई मौका वे हाथ से नहीं जाने देते। कोलम्बिया के राष्ट्रपति बेलिसारियो वेटानकर के साथ वे लगातार टेलिफोन पर सम्पर्क बनाए रखते थे। हालाँकि ना तो वे उनसे कभी मिले थे और न ही दोनों देशों के बीच कोई राजनयिक सम्बन्ध था। एक बार यूँ ही किसी बात पर उनका फोन आया। फिदेल ने बाद में हमें बताया कि ''मैंने इस अवसर का लाभ उठाया और उनसे कोलम्बिया में कॉफी की स्थिति के बारे में ऐसी सूचनाएँ हासिल कीं जो टेलीविजन या अखबारों में नहीं आती थीं।''

क्रान्ति के पहले वे कुछ ही देशों में गये थे और उसके बाद सरकारी दौरे पर गये भी तो विशेष सुरक्षा (प्रोटोकॉल)और संकीर्ण दायरे में घिरे रहे। फिर भी, वे उनके बारे में भी बातें करते हैं और ऐसे दूसरे देशों के बारे में भी जहाँ वे कभी नहीं गये, ऐसे बातें करते हैं जैसे वे वहाँ हो आये हों। जब अंगोला में युद्ध चल रहा था तब वहाँ की एक लड़ाई का उन्होंने एक सरकारी पार्टी में इतने विस्तार से वर्णन किया कि यूरोप के एक प्रतिनिधि को यह विश्वास दिलाना कठिन हो गया कि फिदेल कास्त्रो ने उसमें हिस्सा नहीं लिया है। चे ग्वेरा के पकड़े जाने और मारे जाने के बारे में एक सार्वजनिक भाषण में उनके द्वारा प्रस्तुत विवरण, मोनेडा पैलेस पर हमले और अलेन्दे की मौत पर उनका भाषण तथा हरिकेन फ्लेरा के विध्वंस का उनके द्वारा किया गया वर्णन मौखिक शब्द चित्रों के अनुपम नमूने हैं।

अपने पुरखों के देश, स्पेन के प्रति वे मोहग्रस्त हैं। लातिन अमरीका के भविष्य के बारे में उनका नजरिया वही है जो बोलिवार और मार्ती का था–एक एकीकृत और स्वायत्त समुदाय जो दुनिया के भाग्य को प्रभावित करने में समर्थ है। लेकिन क्यूबा के बाद जिस देश को वे सबसे अच्छी तरह जानते हैं, वह है संयुक्त राज्य अमरीका। वहाँ के लोगों की प्रकृति, सत्ता के ढाँचे और वहाँ की सरकार के गुप्त प्रयोजनों से वे अच्छी तरह वाकिफ हैं और इससे उन्हें नाकेबन्दी के अनवरत तूफान को साफ-साफ देख पाने में काफी मदद मिली। संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार की मनाही के बावजूद हवाना और मियामी के बीच लगभग हर रोज हवाई उड़ान होती है और कोई दिन ऐसा नहीं गुजरता जब हर तरह के अमरीकी यात्री विशेष विमान या निजी विमानों से क्यूबा न आते हों।

चुनाव से पहले वहाँ अमरीका की दोनों पार्टियों के राजनेताओं का लगातार ताँता लगा रहता है। फिदेल कास्त्रो उनमें से जितनों से मिल सकते हैं, उनसे जरूर मिलते हैं और इस बात का पूरा ख्याल रखते हैं कि उनकी अनुपस्थिति में उन लोगों की आवभगत ठीक से हो और नयी सूचनाओं के विस्तृत आदान-प्रदान के लिये उन्हें पर्याप्त समय देने की भी वे भरपूर कोशिश करते हैं। ये वास्तविक उत्सव जैसी मुलाकातें होती हैं। वे उन्हें कुछ आन्तरिक सच्चाइयाँ बताते हैं और उन बातों को बहुत अच्छी तरह उनके सामने रखते हैं, जो उनके द्वारा उपलब्ध कराये गये तथ्यों पर आधारित होती हैं। वे ऐसा जाहिर करते हैं कि जो लोग दुश्मनों के दुष्प्रचार से प्रभावित होकर उनके जैसे एक बर्बर तानाशाह से मिलने आते हैं, उन्हें अपना असली चेहरा दिखाने से अधिक प्रसन्नता उन्हें और किसी बात से नहीं मिलती। एक मर्तबा कांग्रेस सदस्यों के द्विदलीय समूह और यहाँ तक कि पेण्टागन के एक अधिकारी के सामने उन्होंने इस बात का यथार्थ विवरण प्रस्तुत

किया कि कैसे उनके गैलीशियन पुरखों और उनके जेसुइट शिक्षकों ने उन्हें कुछ नैतिक सिद्धान्त प्रदान किये जो उनके व्यक्तित्व के निर्माण में काफी उपयोगी साबित हुए और निष्कर्ष के तौर पर उन्होंने बताया कि ''मैं एक ईसाई हूँ।''

इस बात को सुनकर वहाँ उपस्थित लोग अचम्भित रह गये। संयुक्त राज्य अमरीका के लोग, जिनका लालन-पालन ऐसे संस्कारों में होता है कि वे जिन्दगी को केवल काले और सफेद में ही समझ पाते हैं, फिदेल द्वारा की गयी पहले की व्याख्याओं को भूल गये। उन्होंने केवल अन्तिम वाक्य को पकड़ लिया। अपनी क्यूबा यात्रा के समाप्त होने पर, जब नया दिन निकल रहा था, उनमें से सबसे दकियानूस प्रतिनिधि ने यह आश्चर्यजनक मत प्रकट किया कि उसे विश्वास है कि लातिन अमरीका और संयुक्त राज्य अमरीका के बीच फिदेल कास्त्रो से अधिक प्रभावी मध्यस्थ कोई और नहीं हो सकता।

क्यूबा जाने वाला हर आदमी किसी भी हालत में उनसे जरूर मिलना चाहता है। हालाँकि कई लोग ऐसे भी होते हैं जो उनसे व्यक्तिगत साक्षात्कार का सपना देखते हैं, खासतौर पर विदेशी पत्रकार जो तब तक अपना काम समाप्त नहीं समझते जब तक अपने साथ उनके साक्षात्कार का स्मृति चिह्न नहीं ले जाते। मुझे विश्वास है कि व्यावहारिक रूप से असम्भव नहीं होता तो वे उनमें से हर एक की इच्छा पूरी करते। इस समय 300 औपचारिक अनुरोधों पर निर्णय होना बाकी है, जिसमें पता नहीं कितना समय लगेगा। हमेशा कोई न कोई पत्रकार उनसे मिलवाने के लिये सभी तरह के प्रायोजकों से अपील करने के बाद हवाना के होटल में इन्तजार करता रहता है। उनमें से कई लोग तो महीनों इन्तजार करते हैं। किसके पास जाने से काम बनेगा यह पता न होने के कारण वे रुष्ट हो जाते हैं क्योंकि किसी को पक्का पता नहीं होता कि उनसे मिलने का सही तरीका क्या है? सच तो यह है कि ऐसा कोई तरीका नहीं है। कुछ भाग्यशाली पत्रकारों के लिये यह असामान्य बात नहीं कि वे किसी सार्वजनिक उपस्थिति के समय उनसे कोई आकस्मिक सवाल पूछें और बातचीत हर मनचाहे विषय से सम्बन्धित कई घण्टे लम्बे साक्षात्कार में बदल जाए। वे हर सवाल के जवाब में काफी समय लगाते हैं। निर्भीकतापूर्वक उस विषय के अनपेक्षित और कठिन आयामों को खोलते हैं, लेकिन पूरी सावधानी बरतते हैं कि तथ्य सम्बन्धी कोई भूल न हो, क्योंकि वे जानते हैं कि एक भी शब्द के दुरुपयोग से अपूर्णीय क्षति हो सकती है। इन विरले औपचारिक साक्षात्कारों में जितने समय की माँग होती है, वे उसे पूरा करने का प्रयास करते हैं लेकिन बातचीत के आवेग से उत्साहित होकर अपने मनमौजी लचीलेपन के

कारण अक्सर समय अधिक ही लगा देते हैं। केवल बहुत खास मामलों में ही वे सवालों को पहले दिखाने की माँग करते हैं। कोई भी सवाल, चाहे उकसाने वाला ही क्यों न हो, वे कभी उसका जवाब देने से इनकार नहीं करते, न ही वे अपना धैर्य खोते हैं। कभी-कभी दो घण्टे के साक्षात्कार की योजना चार घण्टे और लगभग हर बार छः घण्टे में बदल जाती है। हो सकता है कि 17 घण्टे भी हो जायें जैसा कि इटालियन टेलीविजन के लिए गिआनी मीना के साथ उनका साक्षात्कार* जो उनके सबसे लम्बे और सर्वाधिक सम्पूर्ण साक्षात्कारों में से एक है।

आखिरकार बहुत थोड़े साक्षात्कार ही उन्हें सन्तुष्ट कर पाते हैं। लिखित साक्षात्कार तो और भी कम, जिनमें स्थानाभाव के कारण सटीकपन और अर्थछटा जैसी उनकी अपनी विशेष शैली का गला घोंट दिया जाता है। उनका मानना है कि टेलीविजन साक्षात्कार अस्वाभाविक होते हैं क्योंकि उनमें बीच-बीच में व्यवधान होना लाजिमी है और उन्हें लगता है कि 7 मिनट के कार्यक्रम के लिए जीवन के 5 घण्टे का त्याग करना अनुचित है। लेकिन जो बात फिदेल कास्त्रो और उनके श्रोताओं, दोनों के लिये सर्वाधिक खेदजनक होती है वह यह कि श्रेष्ठतम पत्रकार भी, खासकर के यूरोपीय पत्रकार, अपने सवालों को यथार्थ संगत बनाने के प्रति उत्सुक नहीं होते। उनमें अपने देश की राजनीतिक सनक और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों के अनुरूप सवाल गढ़कर पुरस्कृत होने की अभिलाषा होती है। वे खुद यह जानने की जहमत मोल नहीं लेते कि आज का क्यूबा वस्तुतः कैसा है? वहाँ की जनता के सपने और वास्तविक निराशा क्या हैं? उनके जीवन की सच्चाई क्या है? इस तरह से वे क्यूबा की आम जनता को दुनिया से संवाद कायम करने के अवसर से वंचित करते हैं और खुद भी फिदेल कास्त्रो से ऐसे सवाल पूछने का पेशागत अवसर खो देते हैं, जो उन यूरोपीय कल्पनाओं और पूर्वाग्रहों पर आधारित न हों जो उनके जीवन से इतने दूर हैं, बल्कि महान फैसलों के वर्तमान दौर में खासकर उनकी जनता की परेशानियों के बारे में हों।

निष्कर्ष के रूप में, इतनी विविध और विपरीत परिस्थितियों में फिदेल कास्त्रो को सुनते हुए मैंने कई बार खुद से यह सवाल किया है कि यदि सत्ता की भ्रान्तिजनक मरीचिका के बीच, बातचीत के प्रति उनका उत्साह सच्चाई के मार्गदर्शक सूत्र पर कायम रहने की स्वाभाविक जरूरत का हर कीमत पर अनुसरण नहीं करता तो भला क्या होता? मैंने कई सार्वजनिक और व्यक्तिगत वार्तालापों के दौरान खुद से यह पूछा है। लेकिन

*यह साक्षात्कार ओशीन प्रेस द्वारा ''एन एनकाउण्टर विद फिदेल (1991)'' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

सबसे अधिक ऐसे लोगों के साथ बेहद कठिन और निष्फल बातचीत के दौरान पूछा है, जो उनके सामने आते ही अपनी स्वाभाविकता और आत्मविश्वास गँवा देते हैं और ऐसे सैद्धान्तिक जड़सूत्रों में बात करने लगते हैं जिनका यथार्थ से कोई लेना-देना नहीं होता या फिर उन लोगों के साथ बातचीत में जो अपनी नजरों के सामने से सच्चाई को झटक कर हटा देते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि पहले ही उन्हें इतनी चिन्ताएँ हैं, उन्हें और अधिक बढ़ाने से क्या फायदा? कास्त्रो भी इस बात को जानते हैं। एक अधिकारी ने जब ऐसा किया तो उन्होंने कहा था : ''आप मुझसे सच्चाई को छिपाते हो ताकि मुझे परेशानी न हो। लेकिन जब अन्त में मुझे उनका पता चलेगा तब मैं उन ढेर सारी सच्चाइयों का सामना होने के आघात से मर जाऊँगा जिन्हें आप मुझे बता नहीं सके।'' हालाँकि उनसे छिपाई जाने वाली बातों में सबसे गम्भीर बातें कमजोरियों पर पर्दा डालने वाली होती हैं। कारण यह कि क्रान्ति को स्थायित्व प्रदान करने वाली बहुत सारी उपलब्धियों–राजनीतिक, वैज्ञानिक, खेल और सांस्कृतिक उपलब्धियों–के साथ-साथ विराट अफसरशाही अयोग्यता भी है जो दैनिक जीवन के लगभग हर एक पहलू को प्रभावित कर रही है, खासतौर पर आन्तरिक खुशहाली को। इसने खुद फिदेल कास्त्रो को भी विवश कर दिया है कि क्रान्ति की जीत के लगभग 30 वर्षों बाद भी डबलरोटी बनाने और बीयर का वितरण करने जैसे विशेष मामलों को निजी तौर पर वे खुद निबटायें।

दूसरी ओर, जब वे राह चलते लोगों से बातें करते हैं तो हर चीज अलग होती है। बातचीत में सार्थकता और सच्चे स्नेह का ठेठ खुलापन वापस लौट आते हैं। उनके कई सैनिक-असैनिक नामों में से केवल एक ही अब उनके साथ है–फिदेल! लोग बिना किसी खतरे के उन्हें घेर लेते हैं, उनके साथ बातचीत में बेतकल्लुफी भरे तू का इस्तेमाल करते हैं, उनसे तर्क-वितर्क करते हैं, उनकी बातों का खण्डन करते हैं और वे उनके आगे अपनी माँगे रखते हैं, तत्काल बात पहुँचाने वाले माध्यम से जिसमें सच्चाई की झड़ी लगी रहती है। एकान्त में नहीं, बल्कि ऐसे ही मौके पर अपने आभामण्डल के कारण दृष्टि पटल से ओझल उस दुर्लभ मानव के बारे में सही-सही पता चलता है। मुझे विश्वास है कि यही वह फिदेल कास्त्रो है जिसे असंख्य घण्टों की बातचीत के बाद मैं जानता हूँ, जिससे होकर राजनीति की प्रेतछाया अक्सर गुजर नहीं पाती। एक संयम से जीने वाला आदमी जिसकी जिज्ञासाओं का कोई अन्त नहीं, जिसने पुराने ढंग की औपचारिक शिक्षा पायी है, नपे-तुले शब्द बोलता है, जिसके तौर-तरीकों में सादगी है और जो सहज विचारों के अलावा किसी भी विचार को ग्रहण करने में असमर्थ है। उसका सपना है कि उसके वैज्ञानिक कैंसर का इलाज ढूँढ लेंगे और उसने एक ऐसे टापू पर विश्वशक्ति

सम्पन्न विदेश नीति तैयार की है जहाँ मीठा पानी उपलब्ध नहीं है और जो अपने दुश्मन देश से 84 गुना छोटा है। यही वह विवेक है जिसके जरिये वे अपनी गोपनीयता की हिफाजत करते हैं क्योंकि उनका अन्तरंग जीवन अब उनके बारे में प्रचलित किंवदन्ती की अत्यन्त अबूझ पहेली नहीं रहा। इस बात पर उन्हें करीब-करीब रहस्यात्मक किस्म का दृढ़ विश्वास है कि मनुष्य की महानतम् उपलब्धि चेतना का समुचित निर्माण है और भौतिक नहीं, बल्कि नैतिक प्रेरणाओं के बल पर ही दुनिया को बदलना और इतिहास को आगे बढ़ाना मुमकिन है। मेरा विश्वास है कि वे हमारे युग के महानतम् आदर्शवादियों में से एक हैं और शायद यही उनका सबसे बड़ा गुण हो, हालाँकि यही उनके लिये सबसे बड़ा खतरा भी रहा है।

कई बार मैंने देखा है कि वे एक अन्तहीन दिवस की थकान पर काबू पाते हुए बहुत रात गये हमारे घर पर पहुँच जाते हैं। कई बार मैंने उनसे पूछा कि क्या हालचाल है और अनेक बार उन्होंने मुझे जवाब दिया ''बहुत अच्छा, हमारे सभी भण्डार भरे हुए हैं।'' मैंने उन्हें फ्रिज खोलकर एक टुकड़ा पनीर खाते देखा है, जो शायद नाश्ते के बाद उनका पहला निवाला था। मैंने उन्हें मैक्सिको में रहने वाली अपनी किसी दोस्त से फोन पर अपने किसी पसन्दीदा पकवान की विधि पूछते और रसोईघर की टेबुल पर झुककर उसे लिखते देखा है, जहाँ रात के झूठे बर्तन अभी भी बिना धुले पड़े थे और टेलीविजन पर कोई पुराने जमाने का गीत गा रहा था–''जीवन एक एक्सप्रेस ट्रेन है जो हजारों मील की यात्रा करती है।'' उन थोड़े से क्षणों में जब वे अतीत में खो जाते हैं, मैंने उन्हें ग्रामीण बचपन के चरवाही के दिनों की भोर, जवानी में छोड़कर चली गयी प्रेयसी और उन तमाम बातों को याद करते सुना है जिन्हें अगर उन्होंने कुछ दूसरी तरह से किया होता तो जीवन से जीत गये होते। एक रात जब वे छोटे चम्मच भर-भर कर धीरे-धीरे वेनीला आइसक्रीम खा रहे थे, मैंने इतने सारे लोगों के भाग्य की चिन्ता से उन्हें अभिभूत पाया, वे इस कदर अपने आप को भुला चुके थे कि एक क्षण के लिये मुझे लगा कि हमेशा दिखने वाले आदमी से अलग यह कोई दूसरा व्यक्ति है। मैंने उनसे पूछा कि इस दुनिया में वे सबसे ज्यादा क्या करना पसन्द करेंगे और उन्होंने झट से जवाब दिया, ''किसी गली के नुक्कड़ पर मँडराने का मन है।''